

ज़मीन में दाना

अल-मसीह के पीछे
हो लेने का मतलब



*zamīn meī dānā. al-masīh ke pīchche ho lene kā
matlab*

**A Grain in the Ground. The Meaning of
Following al-Masih**

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 23]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org

published and printed by

Good Word, New Delhi

The title cover includes OpenClipart-Vectors <https://pixabay.com/vectors/ground-nature-plant-spring-2022491/>.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मसीह की हलीमी अपनाओ	2
मसीह से मिलो	4
ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे	5
अपनी ज़िंदगी से खुदा को जलाल दो	9
अदालत से बचो	10
नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे	12
इंजील, यूहन्ना 12:12-36	13

ईसा मसीह बैत-अनियाह में ठहरा हुआ था। यह गाँव यरूशलम शहर के नज़दीक था। वहाँ उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था। वहाँ लाज़र की बहन मरियम ने ईसा मसीह पर तेल उंडेलकर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया था।

फ़सह की बड़ी ईद करीब थी, इसलिए अनगिनत लोग दूर-दराज़ मुल्कों से यरूशलम आ चुके थे। यरूशलम में ईसा मसीह के दुश्मन भी ताक में बैठे थे। वहाँ उस पर क़ब्ज़ा करने के बहुत मौक़े थे।

ईसा मसीह उनकी साज़िशें ख़ूब जानता था। तो भी वह अगले दिन यरूशलम के लिए रवाना हुआ। एक बड़ी भीड़ साथ चल पड़ी। शहर से भी एक बड़ा हुज़ूम उससे मिलने निकल आया। बहुतों के हाथ में खजूर की डाली थी।

► खजूर की डाली क्यों?

खजूर की डाली ख़ुशी और फ़तह का निशान थी। खजूर की डालियों से वह अपनी तवक्क़ो ज़ाहिर कर रहे थे कि ईसा मसीह यरूशलम में दाख़िल होकर बादशाह बनेगा। इसलिए वह चिल्लाकर नारे भी लगाने लगे,

होशाना!

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!

इसराईल का बादशाह मुबारक है! (यूहन्ना 12:13)

► होशाना का क्या मतलब है?

होशाना इबरानी है। इसका मतलब 'मेहरबानी करके हमें बचा!' है।

► यह आम नारा नहीं है। यह नारा पाक कलाम का एक हवाला है।
कौन-सा हवाला?

यह नारा एक ज़बूर का हवाला है जो फ़सह की ईद पर गाया जाता था (ज़बूर 118:25-26)। यह गाकर लोग आनेवाले अल-मसीह को याद करते थे। 'इसराईल का बादशाह मुबारक है' उनकी तरफ़ से इज़ाफ़ा था।

► वह यह क्यों चिल्ला रहे थे?

इससे वह साफ़ एलान कर रहे थे कि ईसा आनेवाला अल-मसीह है, वह बादशाह जो दुश्मन को मुल्क से हटा देगा।

अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने जवाब में क्या किया, क्योंकि इससे हम एक अहम सबक सीखते हैं। यह कि

मसीह की हलीमी अपनाओ

ईसा मसीह एक जवान गधे पर बैठ गया।

► वह गधे पर क्यों बैठ गया?

यूहन्ना इसका जवाब देता है :

जिस तरह कलामे-मुक्रद्स में लिखा है,
ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा
है। (यूहन्ना 12:15)

► यह कलामे-मुक्रद्स का कौन-सा हवाला है?

ज़करियाह नबी ने यह फ़रमाया था।

► इससे यूहन्ना क्या कहना चाहता है?

हम इसका मतलब बेहतर तौर से समझेंगे अगर हम ज़करियाह का पूरा हवाला पढ़ें। वहाँ लिखा है,

ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधे के बच्चे पर सवार है। [...] मौऊदा बादशाह के कहने पर तमाम अक्रवाम में सला-मती क़ायम हो जाएगी। उसकी हुकूमत एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक मानी जाएगी। (ज़करियाह 9:9-10)

► इससे आनेवाले बादशाह अल-मसीह के बारे में क्या क्या बातें निकलती हैं?

- वह हलीम होगा। इसलिए वह गधे के बच्चे पर सवार होगा।
- वह तमाम अक्रवाम में सलामती क्रायम करेगा।
- उसकी हुकूमत पूरी दुनिया पर होगी।

► इस सोच में और यरूशलम के लोगों की सोच में क्या फ़रक़ थी? लोग एक जंगजू बादशाह चाहते थे जो दुश्मन से इंतक़ाम लेगा। इसके मुक्राबले में ईसा मसीह गधे पर बैठकर एक और रास्ता दिखा रहा था—हलीमी का रास्ता, सलामती का रास्ता। बेशक उसकी हुकूमत बैनुल-अक्रवामी होगी, लेकिन यह अमनो-अमान की हुकूमत होगी। दूसरी क़ौमों भी इसमें शामिल होंगी।

उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन ईसा मसीह के जी उठने के बाद उन्हें समझ आई।

► शागिर्दों को क्या बात समझ न आई? क्या हुजूम ने पहले से नहीं पुकारा था कि ईसा मसीह इसराईल का बादशाह है? ज़रूर। लेकिन उस वक़्त किसी को यह बात समझ न आई कि ईसा मसीह की राह हलीमी की राह है, वह राह जो सलीब तक पहुँचाएगी।

दूसरा सबक़ जो हम सीखते हैं,

मसीह से मिलो

कुछ यूनानी यरूशलम में थे। वह भी ईद मनाने के लिए आए थे।

► यह यूनानी क्यों ईद मनाने आए थे? यह तो गैरयहूदी थे जो यूनानी बोलते थे।

यह लोग यहूदी मज़हब और शरीअत बहुत पसंद करते थे इसलिए उनकी ईदें मनाते थे।

अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।”

► यह गैरयहूदी क्यों ईसा मसीह से मिलना चाहते थे?

इंजील की खुशख़बरी गैरयहूदियों में भी फैलने लगी थी। उन्हें पता चल गया था कि यह आम राहनुमा नहीं है। इसलिए वह जानना चाहते थे कि क्या यह अल-मसीह है।

इन लोगों ने एक काम ठीक किया : वह ईसा मसीह से मिलने आए। जो इस दुनिया की तारीकी से नजात पाना चाहता है लाज़िम है कि वह ईसा मसीह से मिलने आए। यह पहला क़दम है।

► क्या आप ईसा मसीह से मिलने आए हैं?

यहूदियों की तरह यह लोग भी अंदाज़ा लगा रहे थे कि ईसा मसीह बड़ा बादशाह बनेगा। इसलिए बेहतर यह है कि हम पहले से उसके साथी बनें। अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया, क्योंकि यह बहुत अहम है। इससे हम तीसरा सबक सीख लेते हैं। यह कि

ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे

उसने फ़रमाया,

अब वक्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले।
मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना
ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है।
लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता
है। (यूहन्ना 12:23-24)

► दाने की इस मिसाल का क्या मतलब है?

गंदुम का दाना अगर ज़मीन में डाला न जाए तो अकेला ही रहता है। जब ज़मीन में डाला जाता है तो वह मर जाता है, तब ही कसरत का फल लाता है।

► ईसा मसीह दाने की मिसाल से यूनानियों को क्या बताना चाहता था?

तुम लोग देखना चाहते हो कि मैं इसराईल का जंगजू बादशाह बन जाऊँ। लेकिन मेरी राह फ़रक़ है। मैं ज़रूर जलाल पाऊँगा, मगर इस दुनिया में बड़ा बनने से नहीं। मेरी राह सलीब की राह है—वह राह जिससे मैं सचमुच कसरत का फल लाऊँगा। वह राह जिससे तुम सचमुच आज़ाद हो जाओगे, सचमुच अबदी ज़िंदगी पाओगे। जिससे सचमुच सलामती हासिल होगी। शर्त यह है कि तुम मुझ पर ईमान लाओ, मुझ पर जिसने हलीमी की यह राह अपनाई है।

लेकिन हलीमी की यह राह न सिर्फ़ ईसा मसीह की है। यह उसके शागिर्दों की भी है। इसलिए उसने फ़रमाया,

जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफूज़ रखेगा। अगर कोई मेरी खिदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा। और जो मेरी खिदमत करे मेरा बाप उसकी इज़ज़त करेगा।

(यूहन्ना 12:25-26)

- अपनी जान से दुश्मनी रखने का क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह है कि हम योगी बन जाएँ? कि हम अपने जिस्म को दबाते रहें, अपने अना को ख़त्म करने की कोशिश करें?

नहीं, ईसा मसीह यहाँ अपने पीछे हो लेने की बात कर रहा था : जो अपनी जान को अव्वलियत देता है उसका आका ईसा मसीह नहीं हो सकता। ऐसा शख्स अपनी जान को खो देगा, यानी वह नजात नहीं पाएगा। इसके मुकाबले में अपनी जान से दुश्मनी रखने का मतलब यह है कि मैं ईसा मसीह को अव्वलियत दूँ। जो ऐसा करता है वह अपनी जान को अबद तक महफूज़ रखेगा। ईसा मसीह के पीछे हो लेने का मतलब यही है : कि मैं उसकी खातिर अपनी जान देने तक तैयार हूँ।

- इसका क्या मतलब है कि 'जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा'?

ईसा मसीह की राह हलीमी की राह है, ऐसी हलीमी जो सलीब तक पहुँचती है। जो उसका शागिर्द है उसकी भी यही राह है।

► **हलीमी की यह राह कैसी है?**

बड़ी बात यह है कि हम मसीह को प्यार करें, उसे अव्वलियत दें। तब हमारी जान महफूज़ रहेगी, चाहे हम उसकी खिदमत में मर भी जाएँ। लेकिन अगर इस दुनिया की इज़्ज़त और दौलत हमारी जिंदगी में अव्वलियत रखे तो अपनी जान को अबद तक महफूज़ रखने का चांस ही नहीं रहता। यों शागिर्द की राह ईसा मसीह की राह है।

सफ़रदर अली एक ऐसा आदमी था जिसने ईसा मसीह को अव्वलियत दी। वह ऊँचे दर्जे का मौलवी था। ईसा मसीह के पीछे हो लेने से उसे सख़्त दिक्क़त हुई। वह फ़रमाता है, मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे दूध से मक्खी की मानिंद दूर फेंक दिया। उन्होंने मुहब्बत और क़राबत के तमाम वास्ते तोड़ डाले। किसी ने हमारे अहलो-अयाल को बहकाया और भगाया। किसी ने नोट, किसी ने किताबें, किसी ने बहुत-से क़ीमती कागज़ों को चुराया। बाज़ों ने अच्छी तरह से भारी चलते-चलाते प्रेस को तुड़वाया। कोई रुपए और किताबें लेकर भाग गया। किसी ने प्रेस की कई हज़ार किताबों पर हमला करके कौड़ियों के मोल बिकवाया। किसी ने मालो-असबाब दबाया। किसी ने मकान ही दबवाया। और इसी तरह जिसके जो जी में आया कर गुज़रा। अब तक वह मेरा पीछा नहीं छोड़ते।

सफ़र अली को पता चला कि ज़मीन में बीज बोने का क्या मतलब है। सलीब की राह के बारे में हम एक और सबक सीखते हैं। यह कि

अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल दो

- क्या सलीब की यह राह ईसा मसीह के लिए आसान थी? नहीं, वह हद से ज़्यादा परेशान था। उसने फ़रमाया,

अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे। (यूहन्ना 12:27-28)

- क्या उसने यह दुआ की कि मुझे मौत से बचा? नहीं।
- क्यों नहीं? वह तो इसलिए आया था।
- क्यों आया था? ताकि अपनी मौत से हमारी सज़ा उठाए, हमें गुनाह और मौत के क़ब्ज़े से छुड़ाए।
- बचने के बजाए ईसा मसीह ने क्या दुआ की? ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।
- सो हमारी सबसे बड़ी दुआ क्या होनी चाहिए? यह कि ख़ुदा हमारी ज़िंदगी से अपने नाम को जलाल दे।

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।”

जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने खयाल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।”

► क्या उन्हें समझ आई कि आवाज़ क्या कह रही है?

नहीं। लेकिन वह समझ गए कि यह खुदा की तरफ़ से जवाब है। ईसा मसीह ने फ़रमाया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी।” मतलब है ताकि तुम समझो कि यह बात अल्लाह तआला की तरफ़ से है।

लेकिन जो ईसा मसीह की यह राह नहीं अपनाता उसके साथ क्या होगा? उसे ईसा ने आगाह किया कि

अदालत से बचो

उसने फ़रमाया,

अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। और मैं खुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा। (यूहन्ना 12:31-33)

► सलीब की राह किस क्रिस्म की राह है?

अदालत की राह।

► किसकी अदालत की जाएगी?

दुनिया की और दुनिया के हुक्मरान की।

► दुनिया का हुक्मरान कौन है?

इबलीस।

► उसकी अदालत किस तरह की जाएगी?

अपनी सलीबी मौत से ईसा मसीह उस पर फ़तह पाएगा।

► क्या इसका मतलब है कि सलीबी मौत से इबलीस दुनिया का हुक्मरान नहीं रहा?

नहीं। इसका मतलब है कि अब से उसकी तबाही यक़ीनी है, अब उसका थोड़ा वक़्त बाक़ी रह गया है (देखिए मुकाशफ़ा 12:12)।

► दुनिया की अदालत किस तरह की जाएगी?

जो ईसा मसीह की सलीबी मौत क़बूल करके उस पर ईमान लाएँगे वह अदालत से बच जाएँगे। जो इनकार करेंगे उनकी अदालत की जाएगी। उन्होंने ईसा मसीह की नजात क़बूल नहीं की, इसलिए वह अपने गुनाहों में तबाह हो जाएँगे।

► मैं खुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा : इसका क्या मतलब है?

ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के दो मानी हैं। पहले, मसीह को सलीब पर चढ़ाया जाएगा। दूसरे, इस रास्ते से उसे आसमान पर उठा लिया जाएगा। वहाँ पहुँचकर वह उनको अपने पास खींच लाएगा जो उस पर ईमान लाए हैं। एक आख़िरी सबक़,

नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे

- यह बात सुनकर लोगों ने क्या जवाब दिया?

वह बोल उठे, “कलामे-मुक्रद्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आखिर इब्ने-आदम है कौन?”

ईसा मसीह की बातें सुनकर लोग समझ गए कि मसीह वह कुछ नहीं करेगा जो हम चाहते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि आखिर तुम कौन हो? तब ईसा मसीह ने फ़रमाया,

नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ। (यूहन्ना 12:35-36)

- जब लोगों ने पूछा कि आखिर तुम कौन हो तो ईसा मसीह ने यह जवाब क्यों दिया?

कुछ बातें ऐसी हैं जो हम सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह के पीछे हो लेने से समझ सकते हैं। इसलिए वह फ़रमाता है कि नूर में चलते रहो। जो तारीकी में चलता है वह नहीं समझ सकता कि ईसा मसीह कौन है।

यह कहने के बाद ईसा चला गया और गायब हो गया। वह क्यों गायब हुआ? लोग उसकी बातों से मायूस हो रहे थे, क्योंकि सलीब की यह राह उन्हें नहीं भाती थी। साथ साथ अब ईसा मसीह की अलानिया खिदमत खत्म हुई। अब से उसकी तालीम शागिर्दों पर महदूद रही।

ईसा मसीह की यह बातें इत्तफ़ाक़ से नहीं हुई। अपनी अलानिया खिदमत के इख़िताम पर वह अपनी सलीबी राह पर ज़ोर देना चाहता था हालाँकि वह जानता था कि उस वक़्त यह उन्हें बेतुकी-सी लग रही थी। लेकिन यह बातें आज भी मसीह की पैरवी की बुनियाद रही हैं। इसलिए आओ,

- मसीह की हलीमी अपनाओ।
- मसीह से मिलो।
- ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे।
- ख़ुदा को जलाल दो।
- अदालत से बचो।
- नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे।

इंजील, यूहन्ना 12:12-36

अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम खजूर की डालियाँ पकड़े शहर

से निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

होशाना!

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!

इसराईल का बादशाह मुबारक है!

ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-मुक्रद्स में लिखा है,

ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!

देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।

उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलामे-मुक्रद्स में इसका ज़िक्र भी है।

जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था। इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में सुना था। यह देखकर फ़रीसी

आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।”

कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद के मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।”

फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई। लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है। जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफूज़ रखेगा। अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उसकी इज़्ज़त करेगा।

अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।”

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।”

हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने खयाल पेश किया, “कोई फ़रिशता उससे हमकलाम हुआ है।”

ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। और मैं खुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।” इन अलफ़ाज़ से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।

हुजूम बोल उठा, “कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है कौन?”

ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ।”